Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

FOR-LNMU -B.com part - 3Rd Paper-vii – Taxation Theory and Practice Unit-1

करारोपण : अर्थ, सिद्धान्तों एवं वर्गीकरण (Taxation: Meaning, Canons and Classification)

प्रश्न - कर को परिभाषित कीजिये। करारोपण के उद्देश्य तथा सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- आधुनिक युग में कर सार्वजनिक आय का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। "'कर' मुद्रा के रूप में एक अनिवार्य अंशदान है जो नागरिकों के सामान्य हित और कल्याण के लिए व्यय करने के उद्देश्य से सरकार नागरिकों से वसूल करती है।"

कर की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

(i) प्रो० फिण्डले शिराज के अनुसार, "कर सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा वसूल किया जाने वाला वह अनिवार्य भुगतान है जो

सार्वजनिक हित के लिए व्यय को पूरा करने के लिए लिया जाता है।"

(ii) प्रो० सैलिगमैन के अनुसार, "कर जनता द्वारा सरकार को दिया जाने वाला एक अनिवार्य अंशदान है जो सामान्य जनता के हित पर व्यय करने हेतु लगाया जाता है और किसी को विशेष लाभ प्रदान नहीं किए जाते ॥"

(iii) प्रो० टॉजिग के अनुसार, "कर तथा भुगतानों के बीच मुख्य अन्तर यह है कि करदाता और सार्वजनिक अधिकारी के बीच में कोई प्रत्यक्ष 'जैसे को तैसा' का सम्बन्ध नहीं होता।"

(iv) डाल्टन के अनुसार, "कर सार्वजनिक सत्ता द्वारा लगाया गया एक अनिवार्य अंशदान है, चाहे उसके बदले में करदाता को उतनी सेवाएं प्रदान की जाएँ अथवा नहीं और इसे किसी कानूनी सजा के रूप में नहीं लगाया जाता है।"

(v) डी० मार्को के अनुसार, "कर नागरिकों की आय का वह भाग होता है जो सरकार सामान्य जनोपयोगी सेवाओं को चलाने के लिए अनिवार्य रूप से प्राप्त करती है।'

कर की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristic Features of a Tax)

कर की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) कर एक अनिवार्य भुगतान है– **कर एक अनिवार्य भुगतान है, चाहे इससे भुगतान करने वाले व्यक्ति को कोई लाभ प्राप्त हो या न हो। कोई भी नागरिक कर देने से इनकार नहीं कर सकता और न ही कर की चोरी कर सकता है। कर की चोरी दण्डनीय अपराध है और ऐसा करने पर नागरिकों को दण्ड दिया जाता है।**

(2) कर के बदले विशेष लाभ प्राप्त नहीं होता- **कर का सरकारी व्यय से प्राप्त लाभ से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता। करदाता सरकार से कर के अनुपात में कोई लाभ प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है।**

(3) कर-आय का सामान्य हित में उपयोग होता है- **राज्य को कर के रूप में जो आय प्राप्त होती है, वह किसी एक वर्ग विशेष पर व्यय न की जाकर सार्वजनिक हित में व्यय की जाती है, किन्तु इसमें यह आवश्यक नहीं है कि जिस व्यक्ति या जिस वर्ग से आय प्राप्त की जाए उस व्यक्ति या उस वर्ग पर उसे व्यय कर दिया जाए। व्यय करते समय सरकार दारा निजी-हित की अपेक्षा सार्वजनिक-हित का ध्यान रखा जाता है।**

करारोपण के उद्देश्य (Objectives of Taxation)

प्राचीन काल में कर केवल सार्वजनिक व्ययों की पूर्ति करने के उद्देश्य से ही लगाये जाते थे परन्तु आजकल करारोपण का प्रमुख उद्देश्य आय प्राप्त करना ही नहीं वरन् अर्थव्यवस्था में समानता लाने तथा धन के वितरण को न्यायपूर्ण बनाने के उद्देश्य से भी कर लगाये जाते हैं। करारोपण के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं -

(1) आय प्राप्त करना– वर्तमान समय में करारोपण के अनेक उद्देश्य हैं, परन्तु करारोपण का मुख्य उद्देश्य आय प्राप्त करना ही है। कर अन्य स्रोतों की अपेक्षा काफी लोचपूर्ण होते हैं। जितनी आसानी से सरकार करों से आय प्राप्त कर लेती है, उतनी आसानी से अन्य स्रोतों से आय प्राप्त नहीं की जा सकती है।

(2) नियमन व नियन्त्रण करना- वर्तमान समय में करारोपण का प्रयोग आर्थिक स्थायित्व लाने व मादक पदार्थों के उपभोग को रोकने के लिये किया जाता है। जब देश में नशीली वस्तुओं का उपभोग व उत्पादन बढ़ने लगता है तब इन वस्तुओं पर ऊँची दर से कर लगा कर इनके उपभोग व उत्पादन में कमी की जाती है। आय की असमानता को दूर करने के लिये भी ऊँची आय वाले व्यक्तियों पर ऊँची दर से कर लगाये जाते हैं। यदि

देश में आयात बढ़ें और निर्यात घटें तो भी करों की सहायता से विदेशी व्यापार को अपने पक्ष में कर लिया जाता है।

(3) आय के वितरण की असमानताओं को कम करना- न्यायोचित वितरण-व्यवस्था का अभिप्राय आय की असमानता को दूर करना है। युद्धकाल में उद्योगपतियों व व्यापारियों को मनमाना लाभ मिलने लगता है। इस प्रकार का लाभ आर्थिक असमानता को बढ़ा देता है। इसलिये ऐसी स्थिति में ऊँचे कर लगाकर आय में समानता लायी जा सकती है।

(4) राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना- करों से उत्पादन व राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि हो सकती है। उदाहरण के लिये, कर लगाने से पूर्व व्यक्ति जितना उत्पादन व आय प्राप्त कर रहा था, करों के लगने के बाद भी वह उतना ही उत्पादन व आय अपने पास रखना चाहता है, ताकि उसका आर्थिक स्तर पूर्ववत् बना रहे। परन्तु यह तभी सम्भव होगा, जब व्यक्तियों की कार्य करने व बचत करने की इच्छा तीव्र होती है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि के सन्दर्भ में दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि करों से सरकार आय प्राप्त करती है और इस आय को आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में व्यय करके राष्ट्रीय आय बढ़ायी जा सकती है। विकासशील देशों में, जहाँ आर्थिक नियोजन को आर्थिक विकास

का प्रमुख यन्त्र मान लिया गया है, वहीं आर्थिक विकास के लिये करों का महत्त्व कई गुना अधिक बढ़ गया है।

(5) मुद्रा-प्रसार पर नियन्त्रण-मुद्रा-प्रसार में मुद्रा का चलन- वेग बढ़ जाता है। लोगों की क्रय-शक्ति तो बढ़ती है परन्तु मुद्रा की क्रय-शक्ति घटती है। समाज का एक वर्ग लाभ कमाता है तो दूसरा वर्ग हानि सहन करता है। इस प्रकार की दुर्व्यवस्था की रोकथाम कुछ हद तक करों के द्वारा की जा सकती है। मुद्रा के अतिरिक्त चलन-वेग को प्रगतिशील कर-प्रणाली द्वारा रोका जा सकता है। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष कर-प्रणाली उपयुक्त होती है।